श्रीगुरु की सिखावनियों का माहात्म्य

सिद्धयोग पथ पर अध्ययन किए जाने वाले शास्त्रों से उद्धरण

आदि शंकराचार्य की कृति 'आत्मबोध' से एक श्लोक

श्लोक ६६

सत्य का श्रवण व उसका चिन्तन करने पर

साधक के अन्तर में ज्ञान की अग्नि प्रदीप्त होती है।

तब, सर्व मलों अर्थात् सर्व अशुद्धियों से मुक्त होकर

उसकी आत्मा स्वर्ण के समान दमक उठती है।

आत्मबोध, आदि शंकराचार्य द्वारा संस्कृत भाषा में रचित शास्त्र है। श्रीशंकराचार्य भारत के आठवीं शताब्दी के ब्रह्मज्ञानी दार्शनिक थे जिन्होंने अद्वैत वेदान्त दर्शन को दृढ़ता प्रदान की। आत्मज्ञान की प्राप्ति के मार्ग की व्याख्या करने वाले इस ग्रन्थ में अड़सठ श्लोक हैं।

आत्मबोध, श्लोक ६६
मुखपृष्ठ डिज़ाइन और प्रारूप रचना : हाइमे आ. कस्तन्येदा
अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।